विचार बिन्दु

जिस प्रकार जल कमल के पत्ते पर नहीं ठहरता है, उसी प्रकार मुक्त आत्मा के कर्म उससे नहीं चिपकते हैं। –छांदोग्य उपनिषद

राजस्थान में शहरीकरण: जल संरक्षण के मूलभूत प्रयास

राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है, परंतु प्राकृतिक जल संसाधनों के मामले में यह सदैव पिछड़ा रहा है। यहां की मरुस्थलीय जलवायु, कम वर्षा, भूजल का लगातार दोहन और जनसंख्या वृद्धि ने जल संकट को और गहरा बना दिया है। हाल के वर्षों में शहरीकरण की तेज़ रफ्तार ने इस समस्या को अभूतपूर्व स्तर पर पहुँचा दिया है। गांवों से शहरों की ओर पलायन, औद्योगिक इकाइयों की स्थापना, बढ़ती आवासीय कॉलोनियां और जीवनशैली में बदलाव ने जल संसाधनों पर जबरदस्त दबाव डाला है। इस परिप्रेक्ष्य में राजस्थान के शहरीकरण और जल संकट का संबंध गहराई से समझना आवश्यक है।

राजस्थान के जल संकट की जड़ें इसकी भौगोलिक एवं जलवायु परिस्थितियों में छिपी हैं। यहां औसतन 550 मिमी वर्षा होती है, जो देश के अन्य हिस्सों की तुलना में बहुत कम है। पश्चिमी राजस्थान में तो यह और भी कम होकर 200 मिमी के आसपास रह जाती है। थार मरुस्थल का विशाल क्षेत्रफल और रेत के टीलों के बीच बसी बस्तियां वर्षा के अभाव में हमेशा से ही पानी के लिए संघर्ष करती रही हैं। ऐसे में जब शहरीकरण तेज़ी से बढ़ा, तो जल संकट और भी जटिल हो गया।

शहरीकरण का प्रभाव सबसे पहले शहरों की पेयजल आपूर्ति पर दिखाई देता है। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा और उदयपुर जैसे शहरों की आबादी पिछले दो दशकों में कई गुना बढ़ गई है। जोधपुर और बीकानेर जैसे शुष्क शहरों में पेयजल आपूर्ति के लिए नहरों और टैंकरों पर निर्भरता बढ़ गई है। इंदिरा गांधी नहर से पानी की आपूर्ति तो होती है, परंतु उसका वितरण सीमित है और हर साल गर्मियों में हालात बिगड़ जाते हैं। कई बार तो स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि शहरों में जल वितरण को लेकर विवाद और संघर्ष तक देखने को मिलते हैं।

इसके अलावा शहरीकरण ने भूजल दोहन को भी अत्यधिक बढ़ा दिया है। नई कॉलोनियों, मल्टीस्टोरी इमारतों और औद्योगिक इकाइयों को चलाने के लिए भूजल का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है। परिणामस्वरूप राजस्थान के अनेक शहरों में भूजल का स्तर 500 फीट से भी नीचे चला गया है। जयपुर और अलवर जैसे क्षेत्रों में स्थिति बेहद गंभीर है। भूजल स्तर में लगातार गिरावट ने न केवल पेयजल संकट को गहराया है, बल्कि कृषि और पर्यावरणीय संतुलन को भी खतरे में डाल दिया है।

औद्योगिकीकरण भी जल संकट को बढ़ाने वाला एक बड़ा कारक है। शहरीकरण के साथ ही राजस्थान के अनेक शहरों में सीमेंट, वस्त्र, रसायन और खनन आधारित उद्योग स्थापित हुए हैं। इन उद्योगों को बड़े पैमाने पर पानी की आवश्यकता होती है। कई बार उद्योग बिना अनुमति के भूमिगत जल का दोहन करते हैं, जिससे आम जनता के लिए पानी की उपलब्धता प्रभावित होती है। इसके साथ ही औद्योगिक अपशिष्ट जल का प्रदूषण जल स्त्रोतों को भी असुरक्षित बना देता है।

जल संकट केवल एक पर्यावरणीय या आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक स्थिरता से भी जुड़ा हुआ है। जब शहरों में पानी की कमी होती है, तो गरीब और मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। टैंकरों और बोतलबंद पानी पर निर्भरता बढ़ने से आर्थिक असमानता भी गहराती है। ऐसे में सरकार और समाज दोनों को मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना होगा।

शहरीकरण ने जल संकट को केवल मात्रा के स्तर पर ही नहीं, बल्कि गुणवत्ता के स्तर पर भी बढ़ाया है। बढ़ती आबादी और औद्योगिक गतिविधियों ने नालों और जलाशयों को प्रदूषित कर दिया है। अजमेर और उदयपुर जैसे शहरों में झीलें गंदगी और सीवेज की वजह से अपनी स्वच्छता खो चुकी हैं। यही स्थिति जयपुर में मानसागर झील की भी रही है, जिसे समय-समय पर पुनर्जीवित करने के प्रयास किए जाते हैं। प्रदूषित जल न केवल मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि पर्यटन और पर्यावरण को भी क्षति पहुँचाता है।

जल संकट से निपटने के लिए राजस्थान सरकार ने अनेक योजनाएं शुरू की हैं। इंदिरा गांधी नहर परियोजना ने पश्चिमी राजस्थान के कई जिलों की प्यास बुझाई है। इसी प्रकार पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) को भी महत्वाकांक्षी योजना माना जा रहा है। इसके अलावा जल जीवन मिशन के तहत हर घर नल से जल की योजना को लागू किया जा रहा है। वर्षा जल संचयन, तालाबों और बावड़ियों का पुनरुद्धार तथा वाटर हार्वेस्टिंग को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है। परंतु बढ़ते शहरीकरण की गति इतनी तीव्र है कि ये प्रयास अक्सर अपर्याप्त साबित होते हैं।

वास्तविक समाधान समाज की भागीदारी में निहित है। यदि शहरी क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन को अनिवार्य कर दिया जाए, तो बहुत हद तक भूजल पर दबाव कम किया जा सकता है। इसी तरह जल पुनर्चक्रण और अपशिष्ट जल के शोधन को अपनाना समय की मांग है। उद्योगों को भी जल संरक्षण की जिम्मेदारी उठानी होगी और उन्हें अपशिष्ट जल प्रबंधन की तकनीकें अपनानी होंगी। आम नागरिकों को भी जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा, तभी इस संकट पर नियंत्रण पाया जा सकेगा।

राजस्थान का इतिहास हमें बताता है कि यहां के पूर्वजों ने जल संरक्षण के अनूठे पारंपरिक तरीके अपनाए थे। स्टेपवेल्स (बावड़ियां), जोहड़, तालाब और टांके इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये संरचनाएं न केवल वर्षा जल का संचयन करती थीं, बल्कि भूजल पुनर्भरण में भी सहायक होती थीं। आज जरूरत है कि इन पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक शहरी नियोजन से जोड़ा जाए। यदि हर नई कॉलोनी, अपार्टमेंट और औद्योगिक क्षेत्र में ऐसे जल संरचनाओं को अनिवार्य किया जाए, तो राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेश में भी जल संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

जल संकट केवल एक पर्यावरणीय या आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक स्थिरता से भी जुड़ा हुआ है। जब शहरों में पानी की कमी होती है, तो गरीब और मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। टैंकरों और बोतलबंद पानी पर निर्भरता बढ़ने से आर्थिक असमानता भी गहराती है। ऐसे में सरकार और समाज दोनों को मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना होगा।

अंततः कहा जा सकता है कि राजस्थान में शहरीकरण और जल संकट का संबंध सीधा और गहरा है। जिस तेजी से शहरीकरण हो रहा है, उसी तेजी से जल संसाधनों का क्षरण हो रहा है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में राजस्थान के शहरों को भयंकर जल आपदा का सामना करना पड़ सकता है। इस संकट से निपटने के लिए वैज्ञानिक तकनीकों, सरकारी योजनाओं और समाज की जागरूकता को एक साथ मिलाना होगा। तभी राजस्थान अपने शहरीकरण की राह पर आगे बढ़ते हुए जल संकट से उबर पाएगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकेगा।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

राशिफल गुरूवार 25 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, स्वाती नक्षत्र सायं 7:09 तक, वैधृति योग रात्रि 9:53 तक, गर करण प्रातः 7:06 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सायं 7:09 तक है। आज भद्रा रात्रि 8:14 से आरम्भ होगी। आज विनायक चतुर्थी, भाना चतुर्थी, वैधृति पुण्य है। आज तृतीया तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:50 तक, चर 10:44 से 12:19 तक, लाभ-अमृत 12:19 से 3:18 तक, शुभ 4:47 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:17

मेष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृष

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मन का भय दूर होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आज घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

धनु

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी और कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एकात्म मानववाद, अंत्योदय और स्वदेशी विचारों के आदर्श प्रतीक

''अंत्योदय दिवस'' 25 सितम्बर पर विशेष.........

वासुदेव देवनानी

भारत के राजनीतिक और वैचारिक इतिहास में जिन महान विभूतियों ने अपने जीवन, चिंतन और कर्म से समाज को नई दिशा दी, उनमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे भारतीय राजनीति और चिंतन के शाश्वत मार्गदर्शक थे। उनका जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तरप्रदेश के मथुरा जनपद के नगला चंद्रभान (वर्तमान में पंडित दीनदयाल धाम) नामक छोटे से गाँव में हुआ। पंडित दीनदयालजी के पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय रेलवे में स्टेशन मास्टर थे और माता रामप्यारी धार्मिक प्रवृत्ति की घरेलू महिला थीं। माता-पिता के निधन के बाद उनका पालन-पोषण नाना-नानी और बाद में चाचा-चाची ने किया। कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में, फिर गवर्नमेंट हाईस्कूल, सीकर (राजस्थान) में और आगे की शिक्षा उन्होंने पिलानी (राजस्थान), कानपुर और आगरा विश्वविद्यालय में प्राप्त की। वे अपने छात्र जीवन में मेधावी और गोल्ड मेडलिस्ट रहे, साथ ही नैतिकता, अनुशासन और संगठनात्मक क्षमता में भी सबसे आगे थे। साधारण किसान परिवार में जन्म लेने के बावजूद वे असाधारण व्यक्तित्व और अद्भुत विचारशक्ति के धनी बने। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज और राष्ट्र के पुनर्निर्माण में अर्पित कर दिया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन और विचारधारा में भारतीय संस्कृति और परंपरा गहराई से रची-बसी थी। वे मानते थे कि भारत एक राजनीतिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी आत्मा सनातन धर्म के मूल्यों में निहित है। उनका जीवन हमेशा सादगीपूर्ण और एक तपस्वी जैसा था। उनका जीवन त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति रहा। वे जीवन पर्यन्त अविवाहित रहे और अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित कर दिया। जीवन के इन्हीं आदर्शों से वे एक महान व्यक्तित्व के धनी और प्रेरणादायी पुरुष बने। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े। आरएसएस के प्रचारक के रूप में उनकी संगठन क्षमता को देखकर उन्हें भारतीय जनसंघ की स्थापना (1951) के समय महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ दी गईं। 1951 से 1968 तक उन्होंने पार्टी संगठन को ग्राम स्तर तक खड़ा किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सबसे बड़ा बौद्धिक योगदान एकात्म मानववाद का सिद्धांत है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने देश को अंत्योदय की अवधारणा दी जिसका मुख्य उद्देश्य समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति तक सेवा और विकास को पहुँचाना था। यह केवल एक आर्थिक नारा नहीं था, बल्कि समाज के कमजोर, वंचित और शोषित वर्गों के लिए उनकी सच्ची समर्पित जिम्मेदारी की भावना थी। आज भारत सरकार और राज्य सरकारों की योजनाओं में अंत्योदय शब्द और भावना सीधे-सीधे उनके चिंतन की ही देन है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का 11 फरवरी 1968 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय स्टेशन (अब पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन) पर रहस्यमय परिस्थितियों में निधन हुआ। यह घटना भारतीय राजनीति और विशेषकर जनसंघ के लिए अपूरणीय क्षति थी। मात्र 52 वर्ष की आयु में यह दिव्य पुरुष दुनिया छोड़ गया, लेकिन उनके विचार आज भी जीवित और प्रासंगिक हैं। आज जब भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं तो यह स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का नारा पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय के स्वदेशी दृष्टिकोण से मेल खाता है। उनकी अंत्योदय की नीति आज कारगर हो रही है। उन्होंने हमें यह सिखाया कि राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण का मार्ग है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का राजस्थान से गहरा सम्बन्ध रहा है। उन्होंने राजस्थान के सीमांत, ग्रामीण और पिछड़े वर्गों को विकास की मुख्यधारा में लाने का जो दृष्टिकोण दिया था, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वर्ष 1951 में जब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय को अखिल भारतीय स्तर पर संगठन की जिम्मेदारी मिली। उस समय अन्य प्रदेशों के समान राजस्थान में भी जनसंघ की पकड़ बहुत कमजोर थी।

उन्होंने जयपुर, अजमेर, कोटा, उदयपुर जैसे प्रमुख शहरों में जनसंघ की इकाइयाँ स्थापित करवाईं। ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचने के लिए उन्होंने स्वयंसेवकों को प्रेरित किया। दीनदयालजी ने अपने भाषणों में राजस्थान के संदर्भ में यह कहा था कि यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से दुर्गम है इसलिए प्रदेश के रेगिस्तानी इलाकों, सीमावर्ती क्षेत्रों, वनवासी और पिछड़े अंचलों के विकास के लिए अंत्योदय का विचार ही सबसे उपयुक्त मार्ग है। उनके यह विचार कालान्तर में 1977 में राजस्थान में भैरोंसिंह शेखावत के नेतृत्व में बनी जनता पार्टी की सरकार के समय सर्वप्रथम देश में लागू की गई योजना अंत्योदय में साकार हुए जिसे बाद में केंद्र और राज्यों की अन्य सरकारों ने भी लागू किया। राजस्थान में आदिवासी और पिछड़े इलाकों (उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, बारां, सिरोही आदि पिछड़े जनजाति उपयोजना क्षेत्रों) के लिए अंत्योदय की अवधारणा विशेष रूप से सार्थक रही।

राजस्थान की राजधानी जयपुर के धानक्या गाँव में पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मारक बना है, जहाँ उनके जीवन और विचारों को प्रदर्शित किया गया है। उनके नाम पर न केवल कई योजनाएँ चल रही हैं बल्कि शिक्षा, कौशल और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम से कई परियोजनाएँ क्रियान्वित हो रही हैं। ये सब उनकी अंत्योदय और स्वावलंबन की सोच को आगे बढ़ा रहे हैं। मैने शिक्षा मंत्री रहते हुए राजस्थान सरकार के स्कूली पाठ्यक्रम में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी सहित करीब 200 ऐतिहासिक हस्तियों और राज्य के महापुरुषों के जीवन और कृतित्व पर नए अध्याय स्कूल की किताबों में जुड़वाएं थे। इसका उद्देश्य नई पीढ़ी के युवाओं को इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने की सीख देना रहा था। साथ ही मैं अपने सार्वजनिक दृष्टांतों में भी हमेशा पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन को युवा, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं राजनीतिज्ञों के लिए प्रेरणादायक बताता हूँ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके एकात्म मानववाद, अंत्योदय और स्वदेशी के आदर्शों को अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में अपनाएंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वासुदेव देवनानी, अध्यक्ष,
राजस्थान विधानसभा।

पधारो म्हारे देश : पीएम नरेंद्र मोदी आज परमाणु ऊर्जा परियोजना व विकास कार्यों की सौगात देंगे

बाल मुकुन्द ओझा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज राजस्थान के दौरे पर रहेंगे। प्रधानमंत्री अपनी जीवन यात्रा के 75 साल पूरा करने के बाद पहली बार वीरों की धरती राजस्थान आ रहे है। राजस्थान अपनी आन, बान, शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। मोदी की यह यात्रा कई मायनों में ऐतिहासिक है। प्रधानमंत्री गुरुवार, 25 सितम्बर को भाजपा के वैचारिक मार्गदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती के अवसर पर केन्द्र व राज्य सरकार की लगभग 1 लाख 8 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं की बांसवाड़ा से सौगात देंगे। इस अवसर पर 15 हजार युवाओं को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्र वितरित करने के साथ जोधपुर, बीकानेर एवं उदयपुर से नई रेल गाड़ियों की शुरुआत भी करेंगे। कार्यक्रम स्थल बांसवाड़ा के नापला, छोटी सरवन में रखा गया है जहां मोदी एक लक्खी सभा को भी सम्बोधित करेंगे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मोदी आजकल देश के विभिन्न राज्यों का सघन दौरा कर रहे है। इसी क्रम में उनका बांसवाड़ा दौरा, राजस्थान के ऊर्जा, जल संसाधन, परिवहन और रोजगार जैसे अहम क्षेत्रों में नई दिशा देने वाला साबित होगा। इसे राज्य की आधारभूत संरचना को मजबूत करने और सर्वांगीण विकास को गति देने के लिए एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है।

राजस्थान राज्य के सूदूर दक्षिण में स्थित आदिवासी बहुल बांसवाड़ा जिला वागड़ या वागवर के नाम से जाना जाने वाला क्षेत्र है। यहाँ के जंगलों में बांस के वृक्षों की प्रचुरता के कारण भी इस भूभाग को बांसवाड़ा के नाम से जाना जाता है। आरावली पर्वत श्रृंखलाओं में बसा बांसवाड़ा अपनी प्राचीनता, सांस्कृतिक धरोहर और विविधता के लिए प्रसिद्ध है। आदिवासी समुदाय को प्रकृति का सबसे करीबी माना जाता है। इस समुदाय ने संसाधनों के आभाव में भी अपनी एक खास पहचान बनाई है। इस क्षेत्र की आदिवासी संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है। यह जनजाति लोगों का एक ऐसा समूह है, जिनकी भाषा, संस्कृति, जीवनशैली और सामाजिक-आर्थिक स्थिति भिन्न है। मगर देशभक्ति और राष्ट्र निर्माण की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी है। मोदी आदिवासियों की इसी धरा पर विकास परियोजनाओं की सौगात देंगे।

प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल, मोदी की यात्रा को ऐतिहासिक बनाने के प्रयासों में जी जान से जुटे है। ये मोदी ही है जो पहली बार के विधायक भजन लाल को राजस्थान की बागडोर सौंप कर मोदी है तो मुमकिन है को सफलीभूत बनाया। मुख्यमंत्री ने प्रधान मंत्री की बांसवाड़ा यात्रा की तैयारियों का जायजा लेते हुए साफ कहा ये हमारी ही पार्टी है जिसका कार्यकर्त्ता बूथ अध्यक्ष से मुख्यमंत्री के पद तक पहुँच सकता है और ये मोदी जी के कारण ही संभव हुआ है।

उन्होंने सभा स्थल का अवलोकन करते हुए आम जनों को कोई भी परेशानी नहीं हो इसका ध्यान रखने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री, मोदी की मंशा और भावना के अनुरूप आम नागरिक के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए समर्पित भाव से प्रयास कर रहे हैं। भजन लाल जनसेवा की अपनी सोच को आगे बढ़ाते हुए प्रदेश के आर्थिक विकास और आधारभूत ढांचे को जन आंकाक्षाओं के अनुरूप मजबूत बनाने में जुटे हैं। मिली जानकारी के मुताबिक मुख्यमंत्री भजनलाल, प्रधानमंत्री मोदी को अपने शासन के विकास कार्यों का रिपोर्ट कार्ड भी प्रस्तुत करेंगे। रिपोर्ट कार्ड में गांव, गरीब और किसान की विभिन्न समस्याओं के समाधान सहित जन कल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी होंगी। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ का कहना है, बांसवाड़ा में देश का सबसे बड़ा आणविक शक्ति केंद्र बनने जा रहा है। कार्यक्रम में सीएम भजनलाल शर्मा के साथ मध्यप्रदेश के सीएम मोहन यादव और उनकी कैबिनेट के कई मंत्री भी शामिल होंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 1 लाख 8 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं की वागड़ - मालवा - गुजराती संस्कृति के संगम स्थल बांसवाड़ा की पावन धरती से सौगात देने के साथ 2,800 मेगावॉट के माही-बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा परियोजना का शिलान्यास करेंगे, जो प्रदेश की ऊर्जा क्षमता को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में मील का पत्थर साबित होगा। भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम के इस प्रोजेक्ट में 700-700 मेगावाट की चार इकाइयां शामिल होंगी।

इसे बांसवाड़ा जिले की छोटी सरवन तहसील के आड़ीभीत, बारी, कटुम्बी, सजवानिया और रेल गांवों में स्थापित किया जाएगा। पहली यूनिट 2031 तक चालू होगी, पूरी परियोजना 2036 तक पूरी होगी। इससे 5900 मेगावाट बिजली उत्पादन और 5000 से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा। सभी यूनिट शुरू होने के बाद राजस्थान में न्यूक्लियर बिजली उत्पादन 5900 मेगावाट हो सकेगा। भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड की ओर से बांसवाड़ा में यह प्रोजेक्ट लगाया जा रहा है। राजस्थान में न्यूक्लियर पावर का पहला संयंत्र रावतभाटा में लगा हुआ है। अब बांसवाड़ा में दूसरा संयंत्र लगेगा।

इस अवसर पर मोदी राजस्थान सहित कई राज्यों की स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाएं भी देशवासियों को समर्पित करेंगे। ये परियोजनाएं राजस्थान-मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक राज्यों की हैं। प्रधानमंत्री बीकानेर-दिल्ली कैन्टवन्दे भारत एक्सप्रेस, जोधपुर-दिल्ली कैन्टवन्दे भारत एक्सप्रेस एवं उदयपुर सिटी-चण्डीगढ़ एक्सप्रेस का हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ करेंगे। प्रधानमंत्री बांसवाड़ा दौरे में जल संसाधन क्षेत्र को भी नई सौगात देंगे। वे 12 जिलों में 15 पेयजल परियोजनाओं की नींव रखेंगे, जिनकी कुल लागत 5,884 करोड़ रूपये है। इन योजनाओं से लाखों लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध होगा। इसके साथ ही, ईसरदा बांध और धौलपुर लिफ्ट व सिंचाई परियोजनाओं का लोकार्पण भी किया जाएगा।

इन योजनाओं से किसानों को पानी की समस्या से राहत मिलेगी और कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी। जल संसाधन विभाग की 20,833 करोड़ रूपये की परियोजनाओं का लोकार्पण भी करेंगे। मोदी कुसुम योजना के लाभार्थियों से भी रूबरू होंगे। प्रधानमंत्री के मुख्य कार्यक्रम के लाइव प्रसारण से सभी जिला मुख्यालयों, नगर निकायों एवं ठाम पंचायतों को जोड़ा गया है ताकि आम जनता कार्यक्रम के दिग्दर्शन के साथ अपने प्रिय प्रधान मंत्री के भाषण को सुन सके। सभा स्थल पर आमजन के लिए पेयजल, शौचालय, चिकित्सा सुविधा, विद्युत आपूर्ति, सुरक्षा एवं पार्किंग की समुचित व्यवस्था की गई है।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

लोगों के बरसों से अटके काम शहरी सेवा शिविर-2025 में पूरे हो रहे हैं

अलवर, धौलपुर से लेकर सलूम्बर, राजसमंद तक, शहरी हो या ग्रामीण, हर कोई शिविर से खुश होकर लौट रहा है। बरसों से अटके काम शहरी सेवा शिविर-2025 के माध्यम से साकार हो रहे हैं।

नुसरत बानू के आवास का सपना पूरा हुआ :- सलूम्बर शहर निवासी नुसरत बानू अपने परिवार के साथ कच्चे मकान में रहती थी। बरसात के दिनों में छत से पानी टपकता था, जिससे पूरे परिवार को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पक्का मकान बनवाना उनके लिए मुमकिन नहीं था। कुछ दिनों पहले नगर परिषद के कार्मिकों ने सर्वे के दौरान नुसरत बानू को शहरी सेवा शिविर-2025 की जानकारी दी और बताया कि आपका परिवार प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) का पात्र है। उससे इस योजना में आवेदन करवाया गया तथा शिविर में स्वीकृति प्रमाण पत्र सौंपा गया। उसे विभिन्न किश्तों में 1.5 लाख रुपये का अनुदान मिलेगा। नुसरत ने अपने सपनों का मकान बनवाना शुरू कर दिया है।

अब नसरत बानू अपने परिवार के साथ अधिक सुरक्षित और सम्मान जनक जीवन व्यतीत कर पाएगी। उसने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में सुना था कि वे देश के प्रत्येक गरीब परिवार को सरकार की ओर से मकान बनाकर देते हैं। प्रधानमंत्रीजी ने उन्हें पहले से ही उज्ज्वला योजना में गैस कनेक्शन, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना में निःशुल्क राशन दे रहे हैं। राजस्थान के संवेदनशील मुख्यमंत्रा भजनलाल शर्मा भी उन्हें 450 रूपए में गैस सिलेंडर दे रहे हैं, जिससे हम जैसे लोगों का जीवन बड़ा आसान हो गया है। नुसरत बानू को मिली यह वित्तीय सहायता प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 2.0 की प्रभावशीलता और सरकार की संवेदनशीलता का सशक्त प्रमाण है।

शहरी सेवा शिविर बना सहारा, विमला को मिली पेंशन की राहत :- अलवर जिले में स्थित बहादुरपुर निवासी विमला ने वर्ष 2018 में सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लिए आवेदन करवाया था परंतु उसके बाद उसका लंबे समय तक वार्षिक सत्यापन नहीं हो पाने के कारण पेंशन नहीं मिल पा रही थी और परिवार के दैनिक खर्च पूरे करने में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। आर्थिक परेशानियों से जूझ रही विमला की समस्या का समाधान तब हुआ, जब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की दूरदर्शी पहल पर शहरी सेवा शिविर अभियान-2025 चलाया गया। बहादुरपुर नगर पालिका द्वारा लगाए गए शिविर में विमला ने अपनी समस्या दर्ज करवाई। अधिकारियों ने तत्परता दिखाते हुए तुरंत उनकी पेंशन से जुड़ी समस्या का समाधान किया। इस समाधान से विमला को न केवल आर्थिक राहत मिली बल्कि उसे रोज सरकारी कार्यालयों, बैंकों में चक्कर काटने से भी मुक्ति मिली।

मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना बनी आमिर के लिए सहारा :- धौलपुर जिले की नगर पालिका बाड़ी में शहरी सेवा शिविर में एक साधारण ठेले वाले की जिंदगी बदल गई। लोहार बाजार निवासी मोहम्मद आमिर लंबे समय से अपने ठेले पर रोज़मर्रा का सामान बेचकर परिवार का भरण-पोषण कर रहा था। कम आय और बढ़ते खर्चों के बीच उनका व्यापार ठहराव पर था। शहरी सेवा शिविर पहुँचने पर वहां मौजूद अधिकारियों ने उन्हें विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी और मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना के तहत आवेदन करने के लिए प्रेरित किया। योजना की प्रक्रिया पूरी होते ही उन्हें ब्याजमुक्त ऋण सुविधा मिल गई। शिविर में मिली सहायता से आमिर ने ठेले पर ज्यादा किस्म के सामान रखना शुरू किया। अब उनके पास ग्राहकों की पसंद का अच्छा-खासा स्टॉक रहता है। बिक्री में इजाफा हुआ और आमदनी भी बढ़ गई। खुशी का इजहार करते हुए आमिर बोले कि राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना ने मेरे लिए नई राह खोल दी। अब कारोबार बढ़ने के साथ ही परिवार की ज़रूरतें पूरी हो रही हैं और बच्चों की पढ़ाई भी अच्छे से करवा पा रहा हूँ।

विरासत का नामांतरण खुला तो शांति देवी की खुशी का नहीं रहा ठिकाना :- राजसमंद स्थित कुम्भलगढ़ के ग्राम पंचायत धानीन की निवासी शांति देवी के जीवन में वर्ष 2017 एक अंधकारमय मोड़ लेकर आया, जब उनके पति बाबूलाल का निधन हो गया। पति की मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारियाँ उनके कंधों पर आ गई परंतु राजस्व रेकार्ड की एक त्रुटि ने उन्हें वर्षों तक बड़ी कठिनाइयों में डाल दिया। राजस्व अभिलेखों में बाबूलाल की जगह बालूलाद दर्ज था, जिसके कारण विरासत का नामांतरण खुल नहीं पा रहा था। इस त्रुटि के चलते शांति देवी राज्य और केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं में लाभों से वंचित रही। 8 वर्षों तक भटकने के बाद भी समाधान न मिलने से वे टूट-सी गई थी और अपने आप को असहाय महसूस कर रही थीं लेकिन राज्य सरकार की ओर से चलाए जा रहे ग्रामीण सेवा शिविर ने उनके जीवन में आशा की नई किरण जगाई। 18 सितम्बर को ग्राम पंचायत धानीन में आयोजित शिविर के दौरान उन्होंने अपनी उपखंड अधिकारी को बताई। संवेदनशीलता और तत्परता का परिचय देते हुए उपखंड अधिकारी ने उसी समय राजस्व विभाग को शुद्धि के आदेश पारित किए। आदेश मिलते ही तहसीलदार ने मौके पर ही विरासत का नामांतरण दर्ज करवाया और उसकी प्रमाणित प्रतिलिपि शांति देवी को सौंपी। प्रतिलिपि पाकर शांति देवी की आंखों से वर्षों के दुख और संघर्ष से उपजे आंसू छलक पड़े, लेकिन इस बार ये आंसू राहत और खुशी के थे। उन्होंने भावुक स्वर में कहा आज मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे पति की आत्मा को भी शांति मिली होगी। आठ साल की पीड़ा आज खत्म हो गई है। अब मुझे लगता है कि सरकार सचमुच हमारे लिए है।

सहायक निदेशक राजकुमार मीणा, पीआरओ प्रवेश परदेशी, एपीआरओ कुणाल वशिष्ठ, सविता सिंह और ईशा सैनी